निराला के काव्य में मानवतावाद

डॉ. भरतकुमार एन. सुथार
आसी प्रोफेसर, फाइन आर्टस् एन्ड आर्टस् कोलेज,पालनपुर

सृष्टि में मनुष्य की उत्पत्ति कुदरत का श्रेष्ठ वरदान है । विश्व में मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना गया है । मनुष्य सामाजिक प्राणी है । बुद्वि का गुण उसे अन्य प्राणियों से अलग करता है । हमारे देश में मानव को पूज्य माना गया है । मनुष्य के भीतर छुपी हुई मानवता की पूजा चारों और होती हुई दिखती है । कहीं कहीं मानव को देवता तुल्य समझा गया है, तो कहीं कहीं मानव से उपर उठकर वह देवत्व के उच्च आसन पर पहुँच गया है । भारत में या कहें विश्व में रूसी मानव की गरीमा और गुणों का गान हमारे ऋषि–मुनियों तथा कवि या साहित्यकारों ने गाया है । मानवीय मूल्यों की रक्षा में तत्पर इसी मनुष्य को केन्द्र में रखकर हमारे साहित्य में मानवतावाद की स्थापना की गयी है । हिन्दी साहित्यकारोने अपने साहित्य के द्वारा मानव–मूल्यों की स्थापना का प्रयत्न करते हुए रूसी मानवतावाद को जन्म दिया है । हिन्दी में एक वाद के रूप में देखा जाये तो सर्वप्रथम हमें प्रगतिवादी साहित्य के दौरान मानवतावाद के दर्शन होते है । सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, नागार्जुन, दिनकर, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि अनेक आधुनिक कवियों के काव्य में हमें इसी मानवमूल्यों की स्थापना और मानवतावाद की अभिव्यक्ति का प्रयास देखने को मिलता है ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘‘निराला’’ आधुनिककाल के मानवीय दृष्टिकोण से ओतप्रोत, पौरूष काव्य के प्रतिनिधि कवि हैं । छायावाही कवियों में अपने विद्रोहात्मक एवं मानवतासभर व्यक्तित्व के कारण वे अलग ही दिखते है । आधुनिक हिन्दी काव्य को उन्होंने ही ‘‘छन्द के बन्ध’’ और प्रास के ‘‘रजत–पाश’’ से मुक्त किया ।[1] जो मानवतावादी तत्व हमें उनके व्यक्तिगत जीवन में देखने को मिलते हैं वे उनके काव्य में सहज ही दिखते है । निराला का व्यक्तित्व उदार दिल है और उनका संवेदनशील हृदय हमेशा दूसरो के प्रति सहानुभूति रखता है ।

उत्तर प्रदेश जहां पर कवि का बचपन बीता है, इलाहबाद की सडक पर ग्रीष्म की दोपहरी में सड़क पर पत्थर तोड़नेवाली भारतीय युवा नारी के प्रति कवि का हृदय मानव अधिकारों की ओर संकेत करता हुआ मानवतावाद की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है । ‘‘तोड़ती पत्थर’’ कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं जिसमें कविने एक श्रमिक नारी का करूण शब्दचित्र खींचते हुए आधुनिक मानव को सामाजिक विषमता के लिए सोचने के लिए बाध्य किया है –

‘‘वह तोड़ती पत्थर’’
देखा मैंने उसे अलाहाबाद के पथ पर वह तोड़ती पत्थर ।

नहीं छायादार
पेड वह, जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन
नत नयन – प्रिय कर्म रत मन
गुरू हथौडा हाथ,
करती बार बार प्रहार
सामने तरू–मालिका, अट्टालिका, प्राकार ।"[2]

भारत की युवा नारी इलाहाबाद की सड़कों पर गर्मियों में उस तरह हाथों में भारी हथौड़ा लेकर उस तरह का कठिन श्रमकार्य करें, यह दृश्य देखकर कवि का संवेदनशील हृदय वेदना से भर उठता हैं और वे उसके मानव अधिकारों के प्रति सजाग होकर उसके प्रति करूणासभर मानवीय दृष्टि से देखते है । उसी दृष्टिकोण की एक कविता है "भिक्षुक" जिसमें कविने एक भिखारी और उसके दो बच्चों का एक ऐसा वेदनासभर करूण शब्दचित्र खींचा हैं जिसकी पंक्तियाँ हमारे हृदय को झकझोर देती हैं और कवि के मानवतावादी दृष्टिकोण को हमारे साने रखती हैं –

"वह आता"
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता ।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा, लकुडिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को, भुख मिटाने को,
मुँह कटी पुरानी झोली को फैताता ।"[3]

उसे देखकर कवि का हृदय मानवता के लिए पुकार उठता है । सब से अधिक दयनीय हालत तो उस भिक्षुक के साथ चलनेवाले उसके बच्चों की हैं जिसका यथार्थ चित्र कविने खींचा है ।

"साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया–दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये ।
भूख से सूख ओंठ जब जाते,
दाता–भाग्य–विधाता से क्या पाते ?
घूँट आँसुओ के पीकर रह जाते ।"[4]

भिक्षुक के साथ चलनेवाले दो बच्चों का यह प्राथमिक मानव अधिकार हैं कि उन्हें दो वक्त की रोटी मिले, लेकिन दाता या भाग्य विधाता से उन्हें यह भी नहीं मिलती । कवि आगे कहता है कि जब वे बच्चे झूठी पत्तले चाटते हुए सड़क पर नजर आते हैं तभी कुत्ते उनके हाथ से खाना छीन लेने के लिए झपटने लगते हैं । यह मनुष्य की दु:खद परिस्थिति है । कवि निरालाने ऐसे पीडित, दु:खी, निरीह, गरीब, श्रमिक, दलित और उपेक्षितजनों का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हुए उनके प्रति अपनी करूण मानवीय दृष्टि का परिचय दिया है ।

कवि के शब्दो में –

"ठहरो, अहा ! मेरे हृदय में हें अमृत,
मैं सींच दूँगा,
अभिमन्यु – जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दु:ख मैं अपने हृदय में खींच लूंगा ।"[5]

उपर्युक्त काव्य–पंक्तियाँ कवि के उदार मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचायक है । निराला के आरंभिक काव्य में से ही हमें उनकी मानवतावादी दृष्टि का परिचय मिल जाता है । उनके काव्य में मानववादी चेतना की अभिव्यक्ति हमें "परिमल" से ही देखने को मिल जाती है । प्रथम कविता "मौन" में कवि एक गहन आस्था के स्वर में आत्मविश्वास के साथ कहते है कि –

"बैठ लें कुछ देर
आजो, एक पथ के पथिक से "[6]

युग की आपाधापी से हारा–थका मानव न केवल शारीरिक विश्राम करता हैं, किन्तु अपनी लम्बी भागदौड़ में जनसंकुल वातावरण से कटकर थोडे से समय में अपनी आत्मशक्ति को संयोजित करना चाहता है । इसी काव्य में उनके मानववादी स्वर की अभिव्यक्ति हुई हैं, जिसमें हारे–थके मानव का आवाह्न किया गया हैं । उसी प्रकार "परिमल" काव्य संग्रह का एक गीत "खेवा" जिसमें कविने मानव की अदम्य जिजीविषा को व्यक्त किया गया है ।

मानववाद की एक सर्वमान्य परिभाषा यह भी हैं कि मनुष्यता की सब प्रकार के बन्धनों से मुक्ति की आकांक्षा और उसकी सर्वतोमुखी प्रगति ।[7] हिन्दी कविता को निरालाने छन्द के बन्धनों से मुक्ति दिलायी, यही बात उनके मानववादी दृष्टिकोण का परिचय करवाती है ।

निराला वास्तव में मानवतावादी कवि हैं । उनका जीवन कठोर संघर्ष से भरे मनुष्य का जीवन हैं । उनकी कविताओं में संघर्ष करते हुए मानवी के शब्दचित्र भरे पडे हैं । संघर्ष करता हुआ यह आदमी पराजय को स्वीकार नहीं करता । कवि के व्यक्तित्व का विश्वास और कर्म करने की शक्ति उन्हें अपराजेय बना देती हैं ।

कवि विश्वास के साथ कहता है कि –

"अभी न होगा मेरा अनत ।
मेरे जीवन का यह हैं प्रथम चरण,
उसमें कहाँ मृत्यु है जीवन ही जीवन।"[8]

जो सिद्वांत या वाद अव्यावहारिक हो अथवा अमानवीय हो उसमें कवि कदापि विश्वास नहीं करता । वे मनुष्यत्व के विश्वास के रूतने बडे हिमायती है कि उसी की प्रेरणा से उसे ऊँचा उठाने का संदेश अपनी कविताओं में देते है । "विधवा" कविा का करूण शब्दचित्र कवि के भावुक हृदय का खाका खींच देता हैं । कविता में विधवा नारी का करूणा, पवित्र, भावुक और बलिदानी रूप कवि की अनुभूति की तीव्रता को व्यक्त करता है ।

कवि के शब्दो में –

"यह दु:ख वह जिसका नहीं कुछ छोर है
दैव अत्याचार कैसा घोर और कठोर है ।
क्या कभी यों वे किसी के अश्रु जल ?
या किया करते रहे सब को विफल ।" [9]

निराला की कविता में विद्रोह की वाणी का स्वर सुनायी देता है । उसी कारण वे अपनी कविताओं में क्रांति का आहवान करते है, जिसमें मनुष्यत्व का उद्घोष सुनायी पडता है । निराला आत्मविश्वास के कवि है । भारतीय जनता की अजेय शूरता में उनका विश्वास रहा हैं । वे विद्रोह के कवि हैं, मानवीय प्रेम के कवि है । विद्रोह की वाणी उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है, जिसकी अभिव्यक्ति उनके काव्य में अनेक रूपो में हुई है । उनके व्यक्तिगत जीवन का उद्घोष उनकी कविताओं में सुनायी देता हैं । उन्होंने शोषित और पीड़ित किसान को मानव के रूप में अत्यंत निरींह पाया है उसी कारण उन्होंने कर्मठ किसानों की मुक्ति के, लिए क्रान्ति का आवाह्न किया है। "बादलराग" कविता में बादल विद्रोह का प्रतीक है और उसके द्वारा कविने जगत की जीर्णशीर्ण परंपराओं के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है । यथा –

"यह तेरी रण मेरी,
भरी आकांक्षाओ से,
धन, मेरी गर्जन से सजग, सुईत हुंकार,
उस में पृथ्वी के आशाओं से,
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर
ताक रहे हैं, हे विप्लव के बादल ।" [10]

विद्रोह एक मानववादी चेतना है, क्योंकि मानववाद एक विकासशील चिंतन की यात्रा है जिसका आधार मानव समाज हैं । उसी कारण निराला किसी भी प्रकार के शोषण [सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक या वैचारिक] के विरोधी है और समानता की स्थापना पर बल देते है ।निराला के काव्य में मानवतावाद की अभिव्यक्ति के मूल में उनका गंभीर अध्ययन एवं भारतीय चिंतन निहित है। वे अपने काव्य में वेदांतवाद और आध्यात्मवाद से गुजर कर मानववाद तक पहुँच जाते हैं । समाज की प्रगतिशील स्थितियों को ध्यान में रखकर कवि समाजवाद और यथार्थवाद तक पहुँच गया हैं। "कुकुरमुत्ता" और "नये पत्ते" जैसी कविताओं में कविने समाज की विकृत्तियों पर निर्दयतापूर्वक व्यंग्य किया है। अपनी परवर्ती रचनाओं में वे मानवता और प्रकृति के प्रति अपने निकट के परिचय द्वारा अपने लगाव को व्यक्त करते हैं । वे मानव की आत्मविजय के हिमायती है। कविने विज्ञान और वैज्ञानिक साधनों के स्वीकार पर जोर दिया है ।

अन्य तपस्वियों और संतो के काव्य जैसी आध्यात्मिक चेतना या वैराग्य की भावना उनकी मानवतावादी भावना में दिखायी नहीं देती, वह अपने आप में अनूठी है। व्यक्तित्व और प्रखर वैचारिक्ता उनके काव्य में भरी पडी है। कवि के समग्र साहित्य के केन्द्र में मानव हैं । वे मानवीय

अनुभूति के चेता हैं, मानवीय आनंद की तलाश करते है । वे मनुष्यत्व को देवत्व की ऊँचाई तक ले जाने के लिए प्रयत्नशील हैं । कवि की विचारधारा आगे जाकर मनुष्य को दिव्यता का पर्याय बना देती है । उनका मानववाद आध्यात्मिकता का स्पर्श पाकर उनके मानववाद को पश्चिम के मानववाद से अलग कर देता है

संदर्भ

1. डॉ. पाराशर, आधुनिक हिन्दी काव्य, पृ.25
2. निराला, "तोडती पत्थर" पृ.26
3. निराला, "भिक्षुक" पृ.27
4. निराला, "वही" पृ.27
5. निराला, "परिमल" पृ.28
6. निराला, "परिमल" पृ.23
7. निराला के काव्य में मानवीय चेतना, डॉ. रमेश दत्त मिश्र, पृ.52
8. निराला, "परिमल" पृ.93
9. निराला, "परिमल,", "विधवा", पृ.99
10. निराला, "परिमल", "बादलबाग" कविता